अर्थ परिवर्तन की दिशाएं

फ्रांस के भाषावैज्ञानिक ब्रील ने अर्थ विकास के लिए तीन दिशाओं की खोज की है :-

① **अर्थ विस्तार** → अर्थ विस्तार का अर्थ है — अर्थ का सीमित क्षेत्र से निकलकर विस्तार पाना। जैसे — कुशल। कुशल शब्द का अर्थ था- कुशान् लाति (कुशों को लाना या लेना)। कुश का अग्रभाग तीक्ष्ण होता है। उससे हाथ में छेद होने या कटने का भय रहता था। अतः कुश लाना चतुरता का सूचक था। अतएव तीक्ष्ण बुद्धि को 'कुशाग्र बुद्धि' कहा जाता है। यह शब्द धीरे-धीरे 'कुश लाना' अर्थ को छोड़कर 'चतुरता' और 'निपुणता' अर्थ देने लगा। इस प्रकार इसके अर्थ में विस्तार हो गया। अब किसी भी कार्य में दक्ष होने वाले के लिए 'कुशल' शब्द का प्रयोग होने लगा है।

② **अर्थ संकोच** → अर्थ विस्तार के विपरीत कुछ शब्दों के अर्थों में संकोच हुआ है। भाषा वैज्ञानिकों का विचार है कि सभ्यता के विकास के साथ-साथ सामान्य से विशिष्ट की भावना आती

गयी और शब्दों के अर्थ भी संकुचित होते गये। जैसे- मृग — 'मृग' शब्द संस्कृत में जानवर के लिए था, किन्तु आगे चलकर इस शब्द के अर्थ में संकोच हो गया और सभी पशुओं का वाचक शब्द मृग केवल 'हिरण' का वाचक हो गया।

③ **अर्थादेश** → अर्थादेश का अर्थ है — एक अर्थ के स्थान पर दूसरे अर्थ का आ जाना। आदेश का अर्थ है — एक को हटाकर दूसरे का आना। अर्थादेश में प्राचीन अर्थ लुप्त हो जाता है और नया अर्थ आ जाता है। जैसे — आकाशवाणी। इस शब्द का अर्थ देवताओं की वाणी के लिए था। अब All India Radio के लिए प्रयुक्त होता है।

अर्थादेश के भी दो भेद हैं :-

(क) **अर्थोत्कर्ष** — जब शब्दों ~~के अर्थ~~ का प्रयोग बुरे या भद्दे से हटकर अच्छे अर्थ में होने लगता है, तो उसे अर्थोत्कर्ष की संज्ञा देते हैं। जैसे ~~(a)~~ 'साहस' शब्द का पहले 'व्यभिचारी' के लिए प्रयुक्त होता था, किन्तु अब तारीफ के लिए प्रयुक्त होता है।

(B) 'गवेषणा' - का अर्थ गाय ढूंढ़ना था, अब 'अनुसंधान' हो गया है।

(ख) **अर्थापकर्ष** → जब शब्द के अर्थ में परिवर्तन होने पर उसमें अच्छे अर्थ के स्थान पर निकृष्ट अर्थ का भाव आ जाता है तो यह अर्थापकर्ष कहलाता है। जैसे — (a) महाराज - बड़े राजा के लिए था, अब 'रसोइया' हो गया है।

(b) कामशास्त्र, कोकशास्त्र - काम-संबंधी शास्त्र थे। अब 'सेक्स-साहित्य' के लिए है।

(c) हरिजन 'भक्त' के अर्थ में था। अब अछूत के अर्थ में है।

— x —